International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 10, October- 2017, pp. 599-605
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

हरियाणवी लोकगीतों का अध्ययन एवं महत्त्व

प्रदीप देशवाल
मकान न0 383, पुराना हाऊंसिग
बोर्ड कालोनी, रोहतक

लोकगीत लोक के गीत हैं। जिन्हें कोई एक व्यक्ति नहीं बल्कि पूरा लोक समाज अपनाता है। सामान्यतः लोक में प्रचलित, लोक द्वारा रचित एवं लोक के लिए लिखे गए गीतों को लोकगीत कहा जाता है।[1]

जीवन का कोई भाव, पहलू और कार्य ऐसा नहीं है जिसका चित्रण लोकगीतों में न होता हो। हरियाणवी लोकगीतों का विभाजन ऋतु, त्यौहार, जाति और प्रवृत्ति आदि के आधार पर कर सकते हैं। हमारे देश में ऋतु, त्यौहार और उत्सव के अतिरिक्त भिन्न–2 संस्कारों के समय गाये जाने वाले गीत भी पर्याप्त संख्या में है। लोकगीतों में विद्वानों ने संस्कार गीतों को प्रमुख स्थान दिया है।[2] प्राचीन काल में यद्यपि षोडश संस्कारों का प्रचलन था, परन्तु काल एवं परिस्थिति स्वरूप संस्कारों का लोप होता चला गया एवं अब केवल तीन संस्कार जन्म, विवाह और मृत्यु, शेष रह गए हैं। जन्म, विवाह और मृत्यु में भी प्रथम दो संस्कारों के गीतों की अधिकता है क्योंकि मानवमन सहज रूप से रचना और विकास की ओर आकृष्ट होता है। फलस्वरूप मृत्यु गीत अल्प संख्या में है।[3]

हरियाणा के लोकगीतों से प्रदेश की सभ्यता, संस्कृति और समाज के दर्शन हो जाते हैं। सामयिक महत्त्व के गीतों के कुछ उदाहरण हैः

"काची अम्बिया गदराइ सामण में।
बुढ़िया लुगाई मस्ताई फागण में।"

International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 10, October- 2017, pp. 599-605
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

(क) संस्कार–गीत (स्त्री–गीत)

अ. जन्म–गीत

1. गर्भाधान,
2. पुँसवन,
3. सींमतोन्नयन
4. गर्भिणी के नौ महीनों की अवस्था का चित्रण
5. ओजणा
6. दाई, बिहाई, होलढ़ अथवा स्यावड़
7. कुआं धोकना या पूजना
8. चूड़ा कर्म
9. उपनयन

शास्त्रों में प्रथम तीन प्रकारों के वर्णन तो मिलते हैं पर ये हरियाणा में अब प्रचलित नहीं है। अतः जन्म–संस्कार के गीत गर्भावस्था एवं ओजणा के वर्णन से आरम्भ होते हैं।

गर्भावस्था के विभिन्न मासों में उत्पन्न होने वाली इच्छाओं का उल्लेख इस गीत में बड़ी सुन्दरता से हुआ है–

"जी पहला मास जै लागिया, कोई दूध–दही मन जाय,
मेरे अंगणा में अमला बो दिया।
दूजा मास जै लागिया, मेरा निंबुआं में मन जाय।
मेरे अंगणा.....।
तीजा मास जै लागिया, मेरा बेरां में मन जाय। मेरे अंगणा.....।
चौथा मास जै लागिया, मेरा लडुओं में मन जाय। मेरे अंगणा.....।
पांचवां मास जै लागिया, मेरा खीर–पूड़े मन जाय। मेरे अंगणा....।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 10, October- 2017, pp. 599-605
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

छठा मास जै लागिया, मेरा गूंद–गिरी मन जाय। मेरे अंगणा....।

सातवां माास जै लागिया, मेरा फलियां में मन जाय। मेरे अंगणा....।

आठवां मास जै लागिया, मेरा धाणी में मन जाय। मेरे अंगणा....।

नौवां मास जै लागिया, मेरा होलड़ सबद सुनाय।

मेरे अंगणा में अमला बो दिया।"[5]

(ख) विवाह–गीत

मानव–जीवन का यह आवश्यक संस्कार है। इस प्रणाली के अन्तर्गत पिता अपनी कन्या को वस्त्राभूषणादि ये युक्त कर कतिपय संस्कारों के सम्पन्न होने के पश्चात् वर को देता है।

प्राचीन विवाह में ज्यादा रस्में नहीं होती थी। लेकिन लोग आधुनिक विवाह रस्में अपनाने लगे है। जिसमें सगाई, लगन, भात–न्यौतना, हलदात–बान, उबटणा, बारात चढ़ना, बारात–स्वागत, बारात लेना, बारात ढुकना, फेरे, छन, कंगना, धान बोना, विदा, खोड़िया, बारात की वापसी, वर पक्ष के घर में कंगना, साटी, मुख–दिखाई, गौना, लाड्डो के गीत आदि होते है। जब बन्नो गौने के बाद ससुराल जाती है तो उसके माता–पिता उसे उपदेश देते हैं–

"मैं समझांऊ समझ मेरी लाड्डो, अपणा धर्म निभाणा है।

भाई–भतीजे तेरे आड़ै रहजां, किन्नै रोकै सुणावै है।

जोहड़ बिराणा, कुआं बिराणा, नीची नजर लखाणा है।

वारी सोणा, बखते उठणा, यो ही परण निभाणा है।[6]

(ग) मृत्यु–गीत

इन पर बहुत कम गीत लिखे गए है। क्योंकि इन गीतों से पीड़ा बहुत अधिक हो जाती है। कन्या की मृत्यु पर मिलने वाले गीतों में मां की ममता तड़प उठती है। मां अपनी कन्या के वियोग में पागल–सी हो जाती है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 10, October- 2017, pp. 599-605
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

"अरी तेरा बाबल फिरै उदास,

तेरी अम्मा जोहे बाट, अम्मा कौन पुकारे।

भैया तेरा लेन गया, एक बार नैहर आय।

चाची–ताई तेरी रोवैं, उनको रोकन आय।

गहनों का डिब्बा भरा धरा है, एक बार पहन दिखाय।"

बेटी का पिता उदास रहेगा, माँ बेटी की राह देखती रहेगी, भाई लेने जायेगा, चाची–ताई रोती रहेगी। गहने ऐसे ही रखे रहेगे। एक बार पहन कर दिखादे। परन्तु वह नहीं आयेगी।

घ. ऋतु गीत

इन गीतों में बारहमासी गीत होते है। इनका आरम्भ आषाढ़ मास से होता है। इन गीतों में मासिक लोकगीत, वार्षिक पर्व, भाद्रपद मास, आसोज मास, कार्तिक मास, फाल्गुण, चैत आदि मासों से सम्बन्धित गीत गाए जाते है। जैसे –

सावन की फुहार कहूं, या फागुन की धूप।

सबको अपना–सा लगे, प्रिये तुम्हारा रूप।।

सावन मास में गाए जाने वाले गीत में युवतियां सास को कहती है :

"आया री सास्सड़ सामण मास,

झूल बटा दे पीले पाट की री,

आया तै बहुअड़ आवण दे री,

झुल बटाइये अपणे बाप के री।[8]

(ड.) कृषि–गीत

भारत कृषि–प्रधान देश है। यहां कि जनसंख्या ज्यादातर गाँवों में निवास

International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 10, October- 2017, pp. 599-605
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

करती है और खेती करती है। कृषि से सम्बन्धित बहुत सारे गीत बनाए हुए है। खेतों में बहुत अधिक काम होता है। स्त्रियाँ अपने बच्चों को रोते हुए घर छोड़कर खेतों में काम पर जाती है उस समय कृषक–पत्नी का खेती (ईख) के प्रति रोष दिखाई देता है।

"बोहत सताई ईंखड़े रे, तन्नै बोहत सताई रे।

बालक छोड्डे रोवते, तन्नै बोहत सताई रे।"

(च) पनघट के गीत

पनघट पर जाने वाली महिलाओं पर पुरुष वर्ग ताने मारते थे।

"काला जूता ऊंचा है एड्डा, जल भरने को जाना है

घेर में बैट्ठा एक बार चलती को बोल्ली मार गया।

जिनके रे बालम घर में हो ना, उनका सिंगरना ठीक नहीं"

(छ) बाल–गीत

बच्चों के बाल–गीत भी कई तरह के होते हैं। जैसे लोरी और खेल–कूद से सम्बन्धित गीत।

ऊपर पंखा चलता है, नीचे बबलू सोता है

सोते–2 भूख लगी, खाले बेटा मूंगफली।

खेल–कूद के गीतों में 'कुकड़म कुकड़ा' गीत भी बच्चो द्वारा बहुत गाया जाता है।

"कुकड़म कुकड़ा कितना बोझ?" दूसरा कहता है–

"एक पूली तार लै सौमण बोझ"

इस खेल में सभी बच्चे एक मुट्ठी पर दूसरी मुट्ठी रखकर बैठ जाते है। ये पंक्तिया बोली जाती है। यह बोलने पर एक मुट्ठी हटा ली जाती है। अन्त में जिसकी मुट्ठी रह जाती है उसे कान पकड़ने पड़ते हैं।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 10, October- 2017, pp. 599-605
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

देवी–देवता गीत

देवी–देवताओं से सम्बन्धित बहुत सारे गीत प्रचलित है। जैसे बेरी में भीमेश्वरी देवी का मन्दिर है।

भक्त लोग उनसे प्रार्थना करते हुए कहते है –

"मुझ सेवक की लाज रख जगदंबा बेरी वाली हे

चौराहे वाली देवी, हनमुमान मन्दिर, नवरात्रों पर दुर्गा देवी आदि से सम्बन्धित गीत प्रचलित है।

राजनैतिक–प्रभावयुक्त गीत

हरियाणा के लोक–गीतों में उस समय की राजनैतिक परिस्थितियों का बहुत अधिक प्रभाव दिखाई देता है। इनके गीतों में महात्मा गांधी के प्रति पूजनीय भावना दिखाई देती है। इन लोकगीतों में बापू जी की मृत्यु के कारण करूण दृश्य को दिखाया गया है।

काचा कुणबा छोड़ के बाब्बू सुरग लोक में सोगे।

भारत के सब नर–नारी अब बिना आप के होगे।।[9]

हरियाणवी लोकगीतों का महत्त्व

लोकजीवन में लोकगीतों का एक महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। किसी भी देश या प्रदेश की संस्कृति को जानने के लिए उस देश या प्रदेश के लोकसाहित्य को जानना अनिवार्य है। लोकगीत, लोकसाहित्य का ही एक अंग है। लोकगीत जनता के हृदय का उदार होता है। यह किसी भी समाज का दर्पण होता है। लोकगीतों के महत्त्व को हम छः भागों में बांट सकते हैं।

1. सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व

लोकगीत द्वारा हमें उस काल के लोगों के रहन–सहन, रीति–रिवाज व पारिवारिक सम्बन्धों का पता चलता है। जैसे भाई–बहन का प्रेम इन पंक्तियों में प्रकट होता है,

International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 10, October- 2017, pp. 599-605
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

"हे वें आवैं थे चार जणे कोई सांझी तेरे बीरा।

हे मैं भाग्गी थी मिलण चिलण, मेरा टूट्या नौलड़ हार।

हे टूट्टे सै तो टूटण दे, हे मैं बीरा नै कद मिलणां?

हे वे चुग देंगी चुगम चिड़ी, वो पो देगा बणजारा।"

2. धार्मिक महत्त्व

लोकगीत के द्वारा लोगों के धार्मिक विचारों का पता चलता है। शीतला माता, बेरी माता, चौराहे वाली माता, गंगा माता आदि पर अनेक गीत लिखे गए है।

3. भौगोलिक महत्त्व

लोकगीत में बहुत से शहरों, गाँवों व नदियों के नाम मिलते हैं। जो आज लुप्त हो गए है।

4. ऐतिहासिक महत्त्व

लोकगीत में उस समय की परिस्थितियों का ज्ञान होता है, मुगलों के शासनकाल में जनता कितनी दुखी थी। इसका चित्रण लोकगीतों के माध्यम से हुआ है। अनेक लोकगीतों के माध्यम से पता चला है कि लोग महात्मा गांधी को पूजनीय मानते हैं। गीतों के माध्यम से महात्मा गांधी के सभी राजनैतिक व समाज सुधार सम्बन्धी कार्य क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व मिला है।

5. भाषाशास्त्र–सम्बन्धी महत्त्व

लेकगीतों का अध्ययन करने पर भाषाशास्त्र सम्बन्धी अनेक समस्या हल की जा सकती है। भाषातत्वेता डॉ0 सुनीतकुमार चटर्जी ने कहा है कि जो लोग लोकसाहित्य का संग्रह कर रहे हैं, वे भावी भाषीशास्त्रियों के लिए अमूल्य सामग्री उपस्थित कर रहे हैं।

6. नैतिक महत्त्व

लोकगीतों में बड़े, बुर्जुग व दीन–दुखियों के प्रति बहुत सम्मान दिखाया गया है, जिससे हमारे अन्दर भी नैतिक गुणों का विकास होता है।

सन्दर्भ

1. www.wikipedia.com
2. जगदीश नारायण भोलानाथ शर्मा, 'हरियाणा प्रदेश के लोकगीतों का सामाजिक पक्ष, पृ0 66
3. उपरिवत्, पृ0 67
4. उपरिवत्, पृ0 69
5. उपरिवत्, पृ0 72
6. उपरिवत्, पृ0 97
7. डॉ0 आनन्द शर्मा, 'हरियाणा के कवि', पृ0 211
8. श्रीकृष्णदास, 'लोकगीतों की सामाजिक व्याख्या', पृ0 20
9. www.wikipedia.com